



## लोकतंत्र की जीत और भाईचारा

अंत में, न्यायाधीश राजा को अपना मुकुट उतारने को कहता है। राजा अपनी हार मान लेता है और हेम (विद्रोही) के साहस की प्रशंसा करता है। वह एक साधारण नागरिक की तरह जनता में शामिल हो जाता है, जिससे यह संदेश मिलता है कि तानाशाही पर लोकतंत्र की जीत निश्चित है।

ഒടുവിൽ, കിരീടം മാറ്റാൻ ജഡ്ജി രാജാവിനോട് ആവശ്യപ്പെടുന്നു. രാജാവ് പരാജയം സമ്മതിക്കുകയും ഹേമിന്റെ ധീരതയെ പുകഴ്ത്തുകയും ചെയ്യുന്നു. അദ്ദേഹം ഒരു സാധാരണക്കാരനായി ജനങ്ങൾക്കിടയിൽ ചേരുന്നു. സ്വച്ഛായിപത്യത്തിന് മേൽ ജനാധിപത്യം വിജയിക്കുമെന്ന സന്ദേശത്തോടെ നാടകം അവസാനിക്കുന്നു.

<p><b>വിद्रोही</b> – വിപ്ലവകാരി  <b>अधिकार</b> – അധികാരം  <b>बलवान</b> – ശക്തൻ  <b>हर्ज</b> – തടസ്സം / കുഴപ്പം  <b>न्यायाधीश</b> – ജഡ്ജി  <b>इच्छा</b> – ആഗ്രഹം  <b>सर्वोपरि</b> – പരമപ്രധാനം  <b>उत्साह</b> – ആവേശം  <b>उल्लास</b> – സന്തോഷം  <b>सैनिक</b> – പടയാളി  <b>सेनापति</b> – സൈന്യാധിപൻ  <b>अपमान</b> – അപമാനം  <b>आदेश</b> – ഉത്തരവ്  <b>कर्तव्य</b> – കടമ  <b>युद्ध</b> – യുദ്ധം  <b>फैसला</b> – വിധി  <b>असमर्थ</b> – പ്രാപ്തിയില്ലാത്ത  <b>साहस</b> – ധൈര്യം  <b>सलाह</b> – ഉപദേശം  <b>विदा</b> – യാത്രപറയൽ</p>	<p><b>घोषणा</b> – പ്രഖ്യാപനം  <b>मौन</b> – മൗനം  <b>साधारण</b> – സാധാരണമായ  <b>प्रजा</b> – ജനങ്ങൾ  <b>मुकुट</b> – കിരീടം  <b>बधाई</b> – അഭിനന്ദനം  <b>मंत्री</b> – മന്ത്രി  <b>दृश्य</b> – രംഗം  <b>झगड़ा</b> – വഴക്ക്  <b>शांति</b> – സമാധാനം  <b>शत्रु</b> – ശത്രു  <b>बहाना</b> – ഒഴികഴിവ്  <b>अपराधी</b> – കുറ്റവാളി  <b>दंड</b> – ശിക്ഷ  <b>स्वतंत्रता</b> – സ്വാതന്ത്ര്യം  <b>सिंहासन</b> – സിംഹാസനം  <b>ताकत</b> – ശക്തി  <b>प्रवेश</b> – പ്രവേശനം  <b>विजय</b> – വിജയം  <b>पुरस्कार</b> – സമ്മാനം / പുരസ്കാരം</p>
-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

- 1. प्रश्न: 'राजा और विद्रोही' नाटक के लेखक कौन हैं?** 'രാജാ ഓൾ വിദ്രോഹി' നാടകത്തിന്റെ രചയിതാവ് ആര്?  
**उत्तर:** रबींद्रनाथ ठाकुर। രബീന്ദ്രനാഥ ടാഗോർ.
- 2. प्रश्न: इस नाटक का अनुवाद किसने किया है?** ഈ നാടകം വിവർത്തനം ചെയ്തത് ആര്?  
**उत्तर:** अमर गोस्वामी। അമർ ഗോസ്വാമി.
- 3. प्रश्न: राजेन खुद को राजा क्यों मानता है?** രാജൻ സ്വയം രാജാവായി കരുതുന്നത് എന്തുകൊണ്ട്?  
**उत्तर:** क्योंकि वह कद और उम्र में सबसे बड़ा है। അവൻ മറ്റുള്ളവരേക്കാൾ മുതിർന്നവനായതുകൊണ്ട്.
- 4. प्रश्न: नाटक में 'विद्रोही' की भूमिका किसने निभाई?** നാടകത്തിൽ 'വിമതന്റെ' വേഷം ചെയ്തത് ആര്?  
**उत्तर:** हेम। ഹേം.
- 5. प्रश्न: न्यायाधीश (जज) का पात्र किसने निभाया?** ജഡ്ജിയുടെ വേഷം ചെയ്തത് ആര്?

उत्तर: उपेन। ഉപേൻ.

6. **प्रश्न: मंत्री का पात्र किसने निभाया?** മന്ത്രിയുടെ വേഷം ചെയ്തത് ആര്?

उत्तर: जितेन। ജിതൻ.

7. **प्रश्न: राजेन के अनुसार राजा बनने के लिए क्या आवश्यक है?** രാജന്റെ അഭിപ്രായത്തിൽ രാജാവായതിന് എന്താണ് വേണ്ടത്?

उत्तर: ताकतवर या सबसे बड़ा होना। കരുത്തനോ അല്ലെങ്കിൽ മുതിർന്നവനോ ആയിരിക്കണം.

8. **प्रश्न: मति ने झगड़ा सुलझाने के लिए क्या कहा?** വഴക്ക് തീർക്കാൻ മതി എന്താണ് പറഞ്ഞത്?

उत्तर: उसने कहा कि यह सिर्फ एक खेल है। ഇതൊരു കളി മാത്രമാണെന്ന് അവൾ പറഞ്ഞു.

9. **प्रश्न: राजा युद्ध क्यों करना चाहता था?** രാജാവ് യുദ്ധം ചെയ്യാൻ ആഗ്രഹിച്ചത് എന്തുകൊണ്ട്?

उत्तर: मनोरंजन के लिए और सैनिकों का आलस्य दूर करने के लिए। വിനോദത്തിനായും സൈനികരുടെ മടി മാറ്റുന്നതിനുമായി.

10. **प्रश्न: हेम पर क्या आरोप लगाया गया था?** ഹേമിന് മേൽ ചുമത്തിയ കുറ്റം എന്തായിരുന്നു?

उत्तर: राजकीय हाथी के सामने जंभाई लेना। രാജാവിന്റെ ആനയുടെ മുന്നിൽ നിന്ന് കൊട്ടുവായിട്ടു എന്നത്.

11. **प्रश्न: सेनापति युद्ध के समय मैदान छोड़कर क्यों भाग गया?** സൈന്യാധിപൻ യുദ്ധകളം ഉപേക്ഷിച്ചു ഓടിയത് എന്തുകൊണ്ട്?

उत्तर: जनता का विद्रोह और जोश देखकर। ജനങ്ങളുടെ പ്രതിഷേധവും ആവേശവും കണ്ട്.

12. **प्रश्न: न्यायाधीश ने राजा के बारे में क्या कहा?** രാജാവിനെക്കുറിച്ച് ജഡ്ജി എന്താണ് പറഞ്ഞത്?

उत्तर: राजा की इच्छा के सामने सिर झुकाना पड़ेगा। രാജാവിന്റെ ഇഷ്ടത്തിന് മുന്നിൽ തല കുനിക്കേണ്ടി വരും.

13. **प्रश्न: जनता ने न्यायाधीश से क्या कहा?** ജനങ്ങൾ ജഡ്ജിയോട് എന്താണ് പറഞ്ഞത്?

उत्तर: यदि आप कर्तव्य पालन नहीं कर सकते, तो पद छोड़ दें। കടമ നിർവഹിക്കാൻ കഴിയില്ലെങ്കിൽ സ്ഥാനം ഒഴിയുക.

14. **प्रश्न: राजा ने अंत में क्या स्वीकार किया?** അവസാനം രാജാവ് എന്ത് അംഗീകരിച്ചു?

उत्तर: अपनी हार और हेम का साहस। തന്റെ പരാജയവും ഹേമിന്റെ ധീരതയും.

15. **प्रश्न: 'राजचारण' किसका गुणगान करता है?** 'രാജചാരണൻ' ആരെയാണ് പുകഴ്ത്തുന്നത്?

उत्तर: जो सत्ता में होता है (नमक का गुण गाना)। അധികാരത്തിലുള്ളവരെ.

16. **प्रश्न: अंत में राजेन ने हेम को क्या सलाह दी?** അവസാനം രാജൻ ഹേമിന് എന്ത് ഉപദേശമാണ് നൽകിയത്?

उत्तर: राजचारण के पद को खत्म करने की। രാജചാരണൻ എന്ന പദവി നിർത്തലാക്കാൻ.

17. **प्रश्न: इस नाटक से क्या संदेश मिलता है?** ഈ നാടകം നൽകുന്ന സന്ദേശം എന്ത്?

उत्तर: अधर्म और अन्याय पर न्याय की जीत। അനീതിക്ക് മേലുള്ള നീതിയുടെ വിജയം.

18. **प्रश्न: लड़ाई के बिना राजा ने अधिकार क्यों सौंप दिया?** യുദ്ധം കൂടാതെ രാജാവ് അധികാരം കൈമാറിയത് എന്തുകൊണ്ട്?

उत्तर: क्योंकि सेना और जनता ने उसका साथ छोड़ दिया था। സൈന്യവും ജനങ്ങളും രാജാവിനെ കൈവിട്ടുകൊണ്ട്.

19. **प्रश्न: 'बत्तीसी तोड़ना' मुहावरे का क्या अर्थ है?** 'ബത്തിസി തോഡ്ന' എന്ന പ്രയോഗത്തിന്റെ അർത്ഥമെന്ത്?

उत्तर: मारना या दांत तोड़ देना। അടിക്കുക അല്ലെങ്കിൽ പല്ല് അടിച്ചു തകർക്കുക.

20. **प्रश्न: मुकुट छीनने का क्या अर्थ है?** കിരീടം തട്ടിയെടുക്കുക എന്നതിന്റെ അർത്ഥമെന്ത്?

उत्तर: सत्ता से हटाना। അധികാരത്തിൽ നിന്ന് പുറത്താക്കുക.

21. **प्रश्न:** नाटक के उस दृश्य की **पटकथा** तैयार करें जहाँ राजा हेम पर झूठा आरोप लगाता है और युद्ध की घोषणा करता है।

**दृश्य:** एक

**स्थान :** राजा का दरबार

**समय :** सुबह 9 बजे

**पात्र और वेश-भूषा :** राजा (राजेन): सुनहरा मुकुट पहने हुए है। वह रेशमी कुर्ता पहनता है।

मंत्री (जितेन): सफेद रंग का कुर्ता-पाजामा पहना है।

सेनापति: एक तंग वर्दी पहनी है।

हेम (विद्रोही): एक साधारण कुर्ता और पाजामा पहने हुए है।

**दृश्य का विवरण :** राजा अपने ऊँचे सिंहासन पर बैठा है। मंत्री और सेनापति पास खड़े हैं। हेम को सैनिकों द्वारा पकड़कर लाया जाता है।

**संवाद :**

राजा: (क्रोध में) सेनापति! इस विद्रोही हेम ने बहुत बड़ा अपराध किया है।

सेनापति: महाराज, इसने क्या किया?

राजा: जब मेरा राजकीय हाथी इसके घर के सामने से निकला, तब इसने जंभाई ली और थूका।

हम: (निडर होकर) यह झूठ है महाराज! मैंने ऐसा कुछ नहीं किया।

राजा: चुप रहो! मंत्री जी, इसे दंड मिलना चाहिए। हम आज ही इसके विरुद्ध युद्ध की घोषणा करते हैं।

मंत्री: महाराज की जय हो! युद्ध की तैयारी की जाए।

हेम: अन्याय की यह युद्ध कभी सफल नहीं होगा।

22. **प्रश्न:** खेल के अंत में जब राजेन को अपनी गलती का अहसास होता है और वह अपना मुकुट त्याग देता है, उस दिन की राजेन की **डायरी** लिखें।

12 अप्रैल, 2026

रविवार

आज का दिन मेरे लिए एक बड़ी सीख लेकर आया। मैंने सोचा था कि बड़ा होने के नाते मैं राजा हूँ और शक्ति मेरे मुकुट में है। मैंने मनोरंजन के लिए हेम पर झूठा आरोप लगाया और युद्ध छेड़ना चाहा। लेकिन आज मुझे अहसास हुआ कि असली शक्ति मुकुट में नहीं, बल्कि जनता के प्रेम और न्याय में होती है। जब मेरे सैनिक भाग गए और जनता मेरे खिलाफ खड़ी हो गई, तब मुझे अपनी हार समझ आई। हेम सचमुच बहादुर है। आज मैंने मुकुट त्याग कर खुद को हल्का महसूस किया। अब मैं भी जनता का एक हिस्सा हूँ।

23. **प्रश्न:** 'राजा और विद्रोही' नाटक के आधार पर 'हेम' का **चरित्र चित्रण** तैयार करें।

### **चरित्र चित्रण: हेम (विद्रोही)**

रबींद्रनाथ ठाकुर द्वारा रचित नाटक 'राजा और विद्रोही' के मुख्य पात्र है हेम। वह साहसी और निडर है जो राजेन का विरोध करता है। वह इस बात को नहीं मानता कि केवल ताकत के बल पर कोई राजा बन सकता है। जब उस पर बिना किसी कारण के (जैसे जंभाई लेना या थूकना) अपमान का आरोप लगाया जाता है, तब भी वह झुकता नहीं है। अंत में, अपनी सच्चाई और साहस के कारण उसे जनता का पूरा समर्थन मिलता है और वह राजा के अन्यायपूर्ण शासन को खत्म करने में सफल होता है।

24. **प्रश्न:** 'राजा और विद्रोही' नाटक के आधार पर 'राजेन (राजा)' का **चरित्र चित्रण** तैयार करें।

रबींद्रनाथ ठाकुर द्वारा रचित नाटक 'राजा और विद्रोही' के मुख्य पात्र है राजेन (राजा)। वह खुद को राजा मानता है क्योंकि वह सबसे बड़ा और बलवान है। वह केवल अपने मनोरंजन के लिए युद्ध करना चाहता है। वह अपनी सेना को खाली बैठने से बचाने के लिए किसी को दुश्मन बनाने के लिए तैयार रहता है। हालाँकि, जब उसकी सेना और जनता उसका साथ छोड़ देती है, तो वह अपनी हार स्वीकार कर लेता है और राजमुकुट उतार देता है।

25. प्रश्न: 'राजा और विद्रोही' नाटक के आधार पर 'उपेन (न्यायाधीश)' का चरित्र चित्रण तैयार करें।

### उपेन (न्यायाधीश)

रबींद्रनाथ ठाकुर द्वारा रचित नाटक 'राजा और विद्रोही' के मुख्य पात्र है उपेन (न्यायाधीश)। वह न्यायाधीश की भूमिका निभाता है, जो पहले राजा के प्रभाव में रहता है और मानता है कि राजा की इच्छा ही कानून है। लेकिन जब जनता उसे उसके असली कर्तव्य की याद दिलाती है, तो वह बदल जाता है। वह स्वीकार करता है कि यदि वह न्याय नहीं कर सकता, तो उसे अपने पद पर रहने का हक नहीं है। अंत में, वह राजा को अपनी गलतियों के कारण पद छोड़ने के लिए कहता है।

26. प्रश्न: शांति का संदेश देने और अन्यायपूर्ण युद्ध को रोकने के लिए एक पोस्टर तैयार करें।

**"युद्ध नहीं, शांति चाहिए" "अन्याय का अंत ही न्याय की शुरुआत है"**



- झूठे आरोपों को बंद करो।
- जनता की आवाज़ सबसे ऊँची है।
- हथियार छोड़ो, भाईचारा अपनाओ।

**प्रस्तुति: शांति दल, विद्यालय संघ**

27. प्रश्न: राजा और विद्रोही के बीच हुए संघर्ष और अंत में राजा द्वारा सत्ता त्यागने की घटना पर एक समाचार तैयार करें।

### जनता की जीत: राजा ने त्याग मुकुट

केरल: कल शाम बच्चों के खेल के मैदान में एक ऐतिहासिक घटना घटी। राजा बने राजेन ने अपनी हार स्वीकार करते हुए अपना मुकुट त्याग दिया। विवाद तब शुरू हुआ जब राजेन ने हेम पर झूठा आरोप लगाकर युद्ध की घोषणा की। न्यायाधीश और सेनापति ने शुरू में राजा का साथ दिया, लेकिन जनता के भारी विरोध के सामने सेना मैदान छोड़कर भाग गई। अंत में, न्याय की जीत हुई और राजेन ने विजयी हेम को बधाई दी। अब क्षेत्र में शांति और लोकतंत्र का माहौल है।

28. प्रश्न: न्यायाधीश (उपेन) और जनता के बीच न्याय को लेकर हुआ संवाद / बातचीत लिखें।

**जनता:** साहब, हेम निर्दोष है। जंभाई लेना कोई गलती नहीं है।

**न्यायाधीश:** राजा का कहना है कि यह उनका अपमान है। मुझे उनकी बात माननी होगी।

**जनता:** यह गलत है! क्या आप सच और झूठ का फैसला नहीं कर सकते?

**न्यायाधीश:** मैं राजा के नीचे हूँ। मुझे उनके आदेश का पालन करना पड़ता है।

**जनता:** अगर आप सही इंसाफ नहीं कर सकते, तो हम आपका फैसला नहीं मानेंगे।

**न्यायाधीश:** आप लोग सही कह रहे हैं। गलत फैसला सुनाना न्याय नहीं है।

**जनता:** तो फिर हिम्मत दिखाइए और बेकसूर हेम को छोड़ दीजिए।

**न्यायाधीश:** ठीक है, कानून सबके लिए एक है।

**जनता:** हम सब आपके साथ हैं।

**न्यायाधीश:** राजा को भी अब यह समझना होगा कि जनता की खुशी ही सबसे बड़ी है।

29. प्रश्न: राजा और हेम के बीच हुआ संवाद / बातचीत लिखें।

**राजा:** मैं राजा हूँ क्योंकि मैं सबसे बड़ा हूँ।

**हेम:** मैं तुम्हें राजा नहीं मानता।

**राजा:** अगर मेरी बात नहीं मानोगे, तो जेल भेज दूँगा।

**हेम:** मैं तुम्हारे डर से नहीं झुकूँगा।

**राजा:** मेरी मर्जी ही कानून है। मैं युद्ध करूँगा।

**हेम:** राजा का काम लड़ना नहीं, न्याय करना है।

**राजा:** क्या तुम मेरी ताकत से नहीं डरते?

**हेम:** नहीं, क्योंकि तुम गलत और अन्यायपूर्ण हो।

**राजा:** सैनिको! इस विद्रोही को पकड़ लो।

**हेम:** देखो, अब जनता और सैनिक भी मेरे साथ हैं।

---